गंगा कुछ भी न करती, केवल देवव्रत भीष्म को ही जन्म देती तो भी वह आज समाज की माता कहलाती।

नदी को अगर कोई उपमा शोभा देती है तो वो वह माता की है। नदी के तीर पर रहने से अकाल का डर तो रता ही नहीं। जब मेघराज हमें धोखा देते हैं, तब नदीमाता ही हमारी फसल पकाती है। नदी का तट शुद्‌ध और शीतल हवा का होता है। उसके किनारे – किनारे घूमने-फिरने जाएँ तो प्रकृति की मातृवत्सलता के अखंड प्रवाह के दर्शन होते हैं। नदी बड़ी हो और उसका बहाव धीर-गंभी हो, तब उसके तट पर रहने वालों की शान-शौकत और खुशहाली उस नदी पर ही निर्भर रहती है।

जब हम किसी नदी के किनारे पर आबाद शहर की गतियों में घूम रहे हों और एकाध कोने से कहीं नदी की झलक देखने को मिल जाए तो उस मसय हमें कितना आनंद होता है। नदी ईश्वर नहीं है, पर ईश्वर का स्मरण कराने वाली देवी जरूर है। अगर गुरु को नमन करना उचित है तो नदी की भी वंदना करना उचित है। यह तो हुई सामान्य नदी की बात। गंगामैया तो समाज की माता है। कई बड़े-बड़े साम्राज्य इसके तट पर स्थापित हुए हैं।